WOMAN - THE NAME OF SACRIFICE

Woman, the name of Sacrifice
When she is born, she hasn't any clue
The men in the family think "oh! Why you?"
'Where is your heir? Where is the Boy?
The prince for whom we brought this toy'
The moment she cries, She doesn't realize
Unwanted she is, she may rot in Hell
Over the heir, all thoughts dwell
She grows up to see her brother go to school
She protests only to learn she's a fool
'Why waste money over her study?
After all we have to pay her dowry'
She gets married with a dream in her eyes
But seeing that stranger at night
Her fantasy dies
He smells of cigarettes, He smells of whiskey
She surly knows her future would be dusty
Still a ray of hope MOTHER she becomes
But it's not a Boy that comes
She begs, she cries, she screams, she pleads
A second chance is all she needs.
Tears in her eyes for her girl child
To this hungry soul, the world is so wild
'Why? Why did I give her life?'
So that her future is full of sacrifice?
Herself at every step she has compromised
She has howled, she has cried
When half her miseries would suffice
To say woman is the name of sacrifice
It lies in our hands
There are people who have a mouth
But no food to eat
There are people who are intelligent
But no education for them
There are people who are capable
But no opportunity for them
Why this discrimination? Why are they exploited?
Aren't they Human Beings – God's most Beautiful
Creation? Yes! That is the tragedy
They are HUMAN BEINGS
The only beings who can curse and be cursed
The only beings who can exploit and be exploited
The only beings who can be happy and have their
happiness snatched
Yes! Everything is in the hands of
HUMAN BEINGS...

Sushmita Pradhan
Eng. B.A. Hons, 1st year

A NEW BEGINNING...

We often wish for another chance
To make a fresh beginning.

A chance to overcome our mistakes
And change future into winning.

There's no need for a new day
To make a brand new start

It only takes a deep desire
To try with all your heart
To live life a little better
And always be forgiving

And to add a new sparkle to the world
In which we are living.

So never give up in despair
Because there's always a hope,
And don't think you are through
For there's always a tomorrow
And a hope of starting a new.

SUSHMITA PRADHAN
Eng B.A (H) 1st yr

आज का भारत

यहां रक्षक भक्षक बनकर बेगुनाहों को कर दे अंधा।
यहां पुलिस थाने ऐसे जैसे गंगा घाट के लोगों का धंधा।।
यहां मुठभेड़ों के नाम पर हत्या होती है निर्दोशों की।
चौराहों की मर्यादा है ठोकर में रईस मदहोशों की।।
यहां वर्दियों की बाहों में अबला की चीखें गुम हैं।
गांधी जी नैतिकता वाली आंखों के आगे फैला तम हैं।।
भारत गांधी जी के सपनों का कातिल है, हत्यारा है।
फिर भी सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा है।।
गर्मी–सर्दी, बरसातों में निर्धन मर जाए तो क्या?
आमों की गुठली के आटे की रोटी खाये तो क्या?
आदिवासियों की कैसी मजबूरी,
जो 21वीं सदी में पेड़ों की पत्ती खायें।
झोपड़ी में पैदा होकर फुटपाथों पर मर जायें।।
हमने अपने झोपड़ियों के आंगन बहुत सहेजे हैं।
लेकिन अपनी कला नाचने अमेरिका में भेजी है।।
जो भूखो से भीख की उम्मीद कर ले, भारत वह बंजारा है।
फिर भी सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा है।।
खूनी दंगों के जंगल ही जंगल जिसके आंगन में।
लाखों चोटें खाये बैठा है जो अपने दामन में।।
जिसके पूजा घर शामिल हैं होडों में हथियारों की।
ईंटे भी रोती होंगी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे की।।
जिसका रोज तिरंगा अपने ही रंगों में बंट जाता है।
बेटे का पिस्टल बाप के सीने पर तन जाता है।।
भगत सिंह की धरती पर खालीस्तानी नारा है।
फिर भी सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा है।।
कफन, ताबूत तक भी बेशर्मी में हम से हार गये।
भारत के मुर्दे भी बिक सीमा के पार गये।।
हमने आडंबर और भरा धर्म–कर्म के सायों का।
पर दुनिया वालों के आगे मास परोसा गायों का।।
यहां पुजारी भी बैठे है आंखो में नाखून लिये।
और तथाकथित ब्रहमचारी फिरते हैं जेबों में कानून लिये।।
राम तुम्हारी गंगा मैली, गंगाजल भी खारा है।
फिर भी सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा है।।
जहां अभी भी मानव बलि रोज़ चढ़ाई जाती है।
जहां पत्थर की मूरत भी लहू से नहलाई जाती है।।
जुबां कली की घुँघट उठने से पहले सिल जाती है।
भारत में न्याय नहीं मिलता रोज़ तारिखें मिल जाती हैं।।
दुल्हनें भेंट चढ़ती है नित दहेजों की।
और हर रोज संख्या बढ़ जाती है सूनी सेजों की।।
बेबस नौची हुई कली का चकला यहां सहारा है।
फिर भी सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा है।।
यहां कुर्सियां तौली जाती हैं जात–पात के आधारों से।
सत्ता की नैया चलती है गठबंधन की पतवारों से।।
कुटिल नीतियां तोड़ रही निर्धन की खुद्दारी।
और योग्यताएं झेल रही कुर्सी की गद्दारी।।
यहां परिक्षा से पहले परिणाम सुरक्षित होता है।
मिट्टी के माधो का भी सम्मान सुरक्षित होता है।।
जातिगत भेद समाज का कुटिल बंटवारा है।
फिर भी सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा है।।

डॉ. सुरेन्द्र सिंह
राजनीति विभाग, सहायक प्रोफेसर

मैं और मेरी तन्हाई

मैं और मेरी तन्हाई,
जहां–जहां भी मैं गया मेरे
पीछे चली आई।
क्या यही है मेरी किस्मत की लिखाई
जो मुझे इस डगर पर ले आई,
फिर मेने सोचा की यही है मेरे हाथों
की लकीरों की लिखाई,
जो तन्हाई बचपन में मेरे साथ थी।
वह जवानी में थी मेरे साथ चली आई।
फिर मैंने सोचा की सच्चा कोई मिलेगा
जो तन्हाई को दूर करेगा,
यहां भी मैंने खता खाई
और ये तन्हाई फिर मेरे साथ चली
हर रास्ते हर डगर पर यही थी मेरी परछाई।
मैं और मेरी तनहाई
अब तो सच्चे यार ने भी मेरा हाथ छोड़ा
फिर किस्मत ने मेरी मुझसे मुँह मोड़ा
फिर वक्त ने मुझे इसी डगर पर ला छोड़ा
बस अब यही है मेरी परछाई
मैं और मेरी तन्हाई

नवीन डगर बी.ए ऑनर्स प्रथम वर्ष हिन्दी

निर्भरता के परिप्रेक्ष्य में सुरक्षा और संप्रभुता को पुनः परिभाषित करने की आवश्यक्ता

प्राचीन काल में मनुष्य पूर्णतः आत्मनिर्भर था। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह स्वयं ही किसी न किसी युक्ति की खोज करता था। जनसंख्या की अधिकता न होने के कारण राष्ट्र भी आत्मनिर्भर थे। किंतु जैसे जैसे राष्ट्रों की जनसंख्या में वृद्धि होती गई उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए और अधिक संसाधनों की मांग हुई। इसी से वैश्विक अंतः निर्भरता का प्रसंग हुआ। जिन राष्ट्रों के पास तेल का आभाव था, वे अपनी तेल संबंधी आवश्यकताओं के लिए खाड़ी के देशों पर निर्भर करने लगे। जिन राष्ट्रों के पास सामरिक तकनीक का आभाव था, उन्होंने विकसित राष्ट्रों से उच्च प्रौद्योगिक मित्र की सहायता ली। इसी प्रकार एक राष्ट्र की दूसरे राष्ट्र पर निर्भरता बढ़ती गई जिसे वैश्विक अंत निर्भरता कहा गया। इसी अंत निभ्ररता ने सहयोग और शान्ति निर्माण को प्रोत्साहित किया। मिश्रवत् राष्ट्रों के बीच भी यही हुआ जिसने उन्हें समूची आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली को बदलने के लिए प्रोत्साहित किया। आज के भूमंडलीकरण के दौर में व्यापक लोकहित पर ध्यान केन्द्रित करना होगा क्योंकि अब राज्य उपनिवेशवाद ने ले लिया है। गांधी दर्शन के मूल में सत्य, अहिंसा, सादगी अपरिग्रह, श्रम और नैतिकता मिलती है जहां से स्थानीय स्वशासन, स्वावलम्बन, स्वदेशी विकेन्द्रीकरण सहअस्तित्व, शोषणमुक्त व्यवस्था और सहयोग तथा समानता पर आधारित जागृति ढांचे का अभ्युदय होता है। गांधी जी बाहर की

चीजों का एकदम निषेध नहीं करते थे बल्कि वह इसके न्यूनातिन्यून आवश्यक्ता के पक्षधर थे क्योंकि उनका मानना था कि बाहरी शक्तियों के सीमा से अधिक होने पर वे हम पर हावी होती जाएंगी और परिणापम स्वरूप हमारी स्वतंत्रता कम होती जाएगी। कुछ विचारकों का मानना है कि गांधी विचार का अनुसरण करके हम दुनिया से अलग–थलग पड़ जाएंगे। जबकि परिदृश्य एकदम भिन्न है। वास्तव में गांधी जी ऐसे वैश्विक महासंघ की परिकल्पना करते थे जिसमें सभी राष्ट्रों को स्वतंत्र अस्तित्व हो और कोई भी राष्ट्र इतना मोहताज या लाचान न हो कि अन्य राष्ट्र उसके स्वत्व का दोहन या उसकी संप्रभुता का अपहरण कर सकें।

आज समग्र विश्व महत्वपूर्ण क्रांतिकारी मोड़ पर है। हमारे पीछे शीत युद्ध, महाशक्तियों का संघर्ष और सदैव वर्धित सैनिक शस्त्रागारों का इतिहास रहा है और हमारे आगे शान्ति, सहयोग और बातचीत के एक नये युग की दिशा में अग्रसर होने का अवसर हैं। किन्तु इस नये युग की शुरूआत केवल तभी होगी जब हम परिवर्तन के इस अवसर को हासिल करने के लिए सकारात्मक और ठोस कदम उठाएंगे। अभी तक हमने जो परिवर्तन देखें हैं उनकी पुनरावृत्ति न होना ही मानवता के हित में हैं। इस युग के प्रबंधन के लिए नए उपकरणों, नेतृत्व के नए स्वरूपों और राष्ट्रीय तथा वैश्विक हितों के बीच आपसी संबंधों की नयी परिभाषा की आवश्यकता होगीं वैश्विक अंतः निर्भरता यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। अभी तक, समस्या का सामधान करने का दृष्टिकोण केवल राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान केन्द्रित करना ही था। राष्ट्रीय संप्रभुता, सीमाओं की पवित्रता और राष्ट्र–राज्य की स्वायत्ता की अवधारणा अंतराष्ट्रीय कानून से संपुटित होकर व्यापक आयाम पर कार्य कर रही है।

सुरक्षा और संप्रभुता एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। उन्हें एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में समझना होगा। सुरक्षा के बिना राज्य की अंतः निर्भरता के परिप्रेक्ष्य में सुरक्षा और संप्रभुता की नयी परिभाषा देने से पूर्व हमें सुरक्षा और संप्रभुता को जानना होगा। आज के संप्रभु राज्यों की विद्यमान अंतर्राष्ट्रीय पद्दति में कमजोर राष्ट्रों की संप्रभुता खतरे में है। सुरक्षा के बिना राज्य की संप्रभुता का एहसास नहीं किया जा सकता। एशिया प्रशांत क्षेत्रा में या अन्यत्रा होने वाले घटनाक्रमों से पता चलता है कि राज्य, अंतर्राष्ट्रीय संगठन और अन्य वैश्विक अभिकरण एक दूसरे के साथ अपनी बातचीत में सुरक्षा और संप्रभुता को पुनः परिभाषित कर रहे हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा की पुनर्व्याख्या की आवश्यकता है। वैश्विक घटनाक्रमों को देखते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा की और अधिक अनुरूप तथा विस्तृत परिभाषा की आवश्यकता है जिसमें संसाध्न, पर्यावरण और जनसांख्यिकीय मुद्दे शामिल हों। 11 सितंबर, 2001 को न्यूयार्क में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और अमरीकी रक्षा मुख्यालयों पर हुए हमले यह मिसाल पेश करते है कि वैश्विक परिवर्तनों ने किस प्रकार से सुरक्षा संबंधे खतरों की प्रकृति को बदल दिया है। यह घटना बड़े अनुपात में मानवीय त्रासदी है जिसकी व्यापक निंदा की गई। यह हमला विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र पर हुआ था। अतः संप्रभुता को भूमंडलीकरण के युग में नये सिरे से परिभाषित करने के लिए पूण्र संप्रभु राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय अराजकता के बीच संतुलन स्थापित करना होगा। राष्ट्रों के बीच हिंसा नियंत्रित करने संबंधी संप्रभुता के मूलभूत सिद्धांत को संरक्षित किए जाने की आवश्यकता है।

सुरक्षा और संप्रभुता के संदर्भ में हमें राष्ट्रीय और वैश्विक हितों के बीच अंतः संबंधों को भी पुनः परिभाशित करना होगा। वैश्विक अंतः निर्भरता मानवीय कार्यकलापों पर प्रभाव डालती है। 21वी शताब्दी में स्थानीय सुनिश्चित करने के लिए उत्तर और दक्षिण तथा पूर्व और पश्चिम में विद्यमान आर्थिक असंतुलन को दूर करना होगा। जनसंख्या–वृद्धि को नियंत्रित करना होगा और गरीबी उन्मूलन द्वारा इस का समाधान करना होगा। इस दिशा में धार्मिक नेता, वैज्ञानिक, शिक्षक, गैर–सरकारी संगठन और सांस्कृतिक समुदाय विशिश्ट भूमिका अदा कर सकते है। इसके अतिरिक्त, अंतः निर्भरता के प्रबंधन के लिए शान्ति और रक्षा अति आवश्यक है। हथियार संबंधी अंतराष्ट्रीय समझौतों में कमी की जानी होगी, रक्षा व्यय में कटोती करनी होगी, संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद को सुदृण किया जाना होगा। पर्यावरणीय और विषैले अपशिष्टों के निपटाने संबंधी मुद्दों पर आपसी राष्ट्रों के बीच सहमति बनानी होगी।

इस युग में वैश्विक अंतः निर्भरता से बचना संभव नहीं है। अतः प्रत्येक राष्ट्र को अपनी सुरक्षा और संप्रभुता की सुरक्षा हेतु कदम उठाने होंगे ताकि अन्य राष्ट्र उस पर हावी न हो सकें और उसका शोषण न कर सकें।

–साक्षी साहनी कंप्यूटर साइंस, विभाग

अपना–अपना नज़रिया

जिंदगी वो जो खुशी से बीत जाए,
समाज वो जो हमसे मुस्कुराए।
हम वो जो सबसे मिल जाए,
इंसान वो जो सदियों तक याद आये ।।

जिंदगी की तरफ सबका अपना–अपना नज़रिया है। किसी के लिए खुशी तो किसी के लिए दुख है जिंदगी। इंसान जन्म लेते हैं पढ़ते–लिखते, खेलते, रोते जीवन सफर समाप्त कर जाते हैं पर क्या सही है जिंदगी? नहीं जिंदगी का सही मायने में साफ अर्थ सिर्फ इतना नहीं है कि जिंदगी वह बड़ा युद्ध है जिसे जीतने के लिए हम जन्मे हैं। जिदंगी बड़ी किस्मत से मिलती है ये तो सभी कहते पर किस वजह से मिली है उसे कोई ठीक तरह से नहीं बता पाता। जिंदगी वो कर्तव्य वो कर्म है जो हमें बताती है कि सत्य कहो, सच का साथ दो, पूरी मेहनत करो अपने लक्ष्य को जानो अपने और अपने परिवार के लिए जीना, ये जिंदगी नहीं है, दूसरो के लिए जीना, और कष्टों में मस्कुराना यह है ''सच्ची जिदंगी''

दुनिया बहुत खूबसूरत है, पर दुनिया की सबसे खुबसूरत चीज़ हम है और हमारी सबसे प्यारी चीज़ हमारी जिंदगी। जीवन छोटा हो या बड़ा सब दौड़ में लगे रहते हैं, कोई पैसे की दौड में, तो कोई हारने की दौड़ में, पर हमारी जिदंगी की असली पहचान तो कहीं–न–कहीं भूलते जा रहे हैं। क्या दौड़ने के लिए जिंदगी मांगी थी? नहीं आज का इंसान दूसरे की जिंदगी के पीछे पड़ा है और अपनी जिंदगी और अपना कर्तव्य तो यहां किसी को याद नही। अपनी चीज़, अपना घर, अपने लोग सब महत्वपूर्ण है। परंतु दूसरे की जिंदगी, दूसरे का दुख, दूसरे के अपने खुद नहीं। अगर इस दौड़ में जीत भी गए तो जीवन की शांति जो प्रत्येक मनुष्य के लिए जरूरी है उसे कहां से लाओगे। मैं ये नहीं कहती कि जिंदगी का सबसे बड़ा पहलू है जिसे मैं तो क्या कोई भी नहीं बांध सकता जिंदगी वो नज़रिया है जिसे सभी मनुष्य अपने–अपने तरीके से देखते है। अगर किसी की खुशी के लिए अपनी जिंदगी कुर्बान कर दी जाए, तो वो है मेरे लिए जिदंगी।

जिंदगी जीना और जीने देना दो अलग–अलग बातें हैं। कोई अपनी जिंदगी के लिए दूसरों की जिंदगी बर्बाद कर देता है। तो कोई दूसरे की जिंदगी के लिए अपनी जिदंगी बर्बाद कर लेता है। जीवन छोटा–सा काम अनेक करो, तो सब कुछ, ना करो तो फरेब। जीवन बीता जा रहा है यह किसी के लिए नहीं रूकता पहले भी कई लोग आए जो दूसरों के लिए जिए और समाप्त हो गए पर उनके विचार और वाणी का आज लोग फायदा ले रहें हैं। उन्हें अपना लक्ष्य मानता है, तो कोई उनके विचारों का मज़ाक। मैं यह जानना चाहती हूं कि हम कहते हैं, वो अच्छे थे, महान थे, हम उनकी तरह बनना चाहते हैं, पर क्या उन्हें बनाने वाला और हमें बनाने वाला अलग हैं खूबियां सभी में है पर उसे उभारने की कोषिष स्वंय हमें करनी होगी।

अंतः में मैं यही कहना चाहूंगी कि जिंदगी में अभी तक जो मैंने समझा, उसका छोटा सार लिखा है, पर जिंदगी काफी सुदंर और सुनहरी भी है जिसे और अच्छे से जानना अभी भी बाकी है।

नविता

भारत पीड़ा

मै भारत हूं, तुम्हारा भारत
मेरी पुकार सुनों, मेरी गुहार सुनों।
दबी है आवाज, वो आवाज सुनों।
मुझे तब इन गोरों ने लूटा
अब ये काले मुझे सताते हैं।
अपने स्वार्थ की खातिर
मेरी चीजों की बोली लगाते हैं।

मै भारत हूं, तुम्हारा भारत
मुझे अपना स्वाभिमान प्यारा है।
बड़ी दिनों बाद मिली आजादी
अब गुलाम बनना नहीं दुबारा है।
मेरे प्यारे देष वासियों
मुझे अब तुम्हारा ही सहारा है।
देखो तुम्हे तुम्हारे भारत ने पुकारा है।

मै भारत हूं, तुम्हारा भारत
मुझे इन कालों से बचाओं।
इनके काले घोटालों से बचाओ।
चाहें बेषक शोर मचाओ।
सोए हुए सारे इंसानों को जगाओ।
आहिस्ता–आहिस्ता बिक रहा हूं मैं।
ये खबर गली–गली सुनाओं।
बस मुझे इन कालों से बचाओं

मै भारत हूं, तुम्हारा भारत
एक दिन मैं भी बिक जाऊंगा।
तुम भी बिक जाओगे
वो गुलामी का वक्त फिर दोहराओगे।
क्या मुझे इन कालों से नहीं बचाओगं?
मेरी खातिर क्या आगे नहीं आओगे?

मै भारत हूं, तुम्हारा भारत
मेरी पीड़ा को कुछ लोगो ने बढ़ाया है।
मुझे निगलने की खातिर देखो
विदेशी दानवों को बुलाया है।
मेरी रक्षा करो इन दानवों से
तुम्हे तुम्हारे भारत ने बुलाया है।
मै भारत हूं, तुम्हारा भारत

आषीष चौहान
बी.ए (ऑनर्स) राजनीतिक शास्त्र
द्वितीय वर्ष

पीढ़ी अंतराल

"बेटा पैदा हुआ" सुनकर खुषी दौड़ जाती है चमकदार
किन्नरो को बधाईयां दे, होता है भोज शानदार
खुष हो जाते सभी जन कहते
मिल गया बुढ़ापे का सहारा
कर देगा सारी मुष्किलों का संहार
घर की शान का है सूचक
और है खुषियों का जिम्मेदार
मिलता मां से स्नेह, पिता का प्यार

बचपन से लड़कपन तक कितना अच्छा था पिता का साथ
आज अचानक कहां से आ गया यह अंतराल
जिसको हाथ थाम चलना सिखाया
आज संग कदम मिला के चलने को भी नहीं तैयार

अ, आ, इ, ई, ए फॉर ऐपल, पहाड़े सीखाने वाला
बाप आज कितना है लाचार
एक ही छत के नीचे अजीब से व्यवहार
नित्यप्रति यही कार्यक्रम 'बेटा बनाम बाप'

अब तो अखबार तक को लेकर होते हैं गृहयुद्ध
पिता हिन्दी और बेटा पढ़े अंग्रेजी समाचार
पिता से दो रुपए मांगने पर मिलते थे रुपए चार
अब बेटा कमाने लगा है, हो गया है होषियार
क्या हाथ में चार पैसे आने पर भूल जाया करते हैं
षिष्टाचार
पिता हैं मोहताज, नहीं रहा दो रुपए का भी हकदार

दोनो के बीच खिंच गई है कितनी विषाल दीवार
एक तरफ आधुनिकता, दूजी तरफ है अंधकार
अपने आपको 3जी और पिता ब्रॉडबैण्ड
बन कर रह गया है यार

इन दोनों के बीच में स्त्री हो जाती है लाचार
मां, पत्नी, बेटी स्त्री के हैं कितने ही किरदार
इस पीढ़ी अंतराल से तंग आ बाप करता है
मुख रुपी वार आउट कहता है।
"कभी तुम भी बाप बनोगे बर्खुर्दार।"

नीलिमा प्रकाष
बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

कुपोषण : समाज का अभिशाप

मन उद्वेलित है पष्न हृदय में घूम रहे हैं
मानव शरीर में मानवता को ढूंढ रहा है
कंपन सा किसने हृदय में मेरे जगा दिया है
सहसा ही ऐसे प्रष्न को किसने जन्म दिया है
देखा मेने दृष्य हृदय को मथने वाला
करुणा के रस से सिक्त विलोड़ित करने वाला
रक्त मांस से रिक्त देह एक देखी मेने
लगता था जैसे वृक्ष कोई ठूंठ खड़ा हो
चेहरे पर था ना ओज ना नयनों में ज्योति
जैसे जीवन से विहीन कोई जीव पड़ा हो
लगा एक क्षण मुझको तब मैं समझ से पाई
था वो ठीक मनु की संतति हम सबका भाई
पर हाय! यह ऐसी दषा को प्राप्त है क्यों
निर्जीविता कण–कण में इसके व्याप्त है क्यों
जन्मा तो शायद यह भी था हम सबके जैसा
प्राण का एक अंषी ही अब मात्र है क्यों
इस प्रष्न का उत्तर अभी भी जानना था
मुझको तो इसके सत्य को पहचानना था
कारण था क्या उस देह की निर्जीवता का
उस अस्थिपंजर मात्र की दयनीयता का
खोजा तो पाया सबको मैने कटघरे में
पूछा तो सब थे जड़, थे सब ही बुत बने से
देखा तो सबसे अग्रणी थे राजनेता
थे उदयमी भी साथ में हम भी थे जनता
हम सब ही हैं इस रोग के कारण बराबर
कोई रोजगार को छीनकर, कोई कर बढ़ा कर
कोई तो सब कुछ लाभ या हानि में तोले
कोई तो है बस मौन मुख से कुछ न बोले
कोई वहीं भूखे षिषु को दे भगाता
कोई तो सबकुछ देख कर भी आंख मूंदे
करुणा स्वरुप ना है उपस्थित चार बूंदे
क्यों कर दिया वंचित हमें जीवन के सुख से
है कौन जो इनको निकाले काल–मुख से
इस घृणित परिदृष्य का उपचार क्या है
हो चुकी भूलों का अब परिहार क्या है
क्या करें जिससे कोई सदभाव जागे
क्या करें जिससे कुपोषण दूर भागे
यदि हम कर्तव्य अपने पूर्ण कर लें
राजा–प्रजा क्षत्रिय वणिक सब आज प्रण लें
साधनों का भी हो अब वितरण बराबर
कोई भी ना एक दूसरे का भाग पर ले
हो लोक के इस तंत्र के पहिए सभी सम
ना कोई पाए अधिक ना ही कोई कम
जो कह रहे संख्या है जन की मूल इसका
ये है नहीं कारण ये उनकी है विमुखता
यदि मात्र जनसंख्या ही करती यह सुनिष्चित
तो चीन होता हमसे भी ज्यादा कुपोषित
अब भी समय है भूल यह अपनी सुधारें
कर्तव्य को अपने नहीं अब हम नकारें
आओ सभी मिलकर नई एक लौ जलाएं
इस रोग पर अभिषाप पर हम विजय पायें
छोटे–बड़े सब साथ हो सब मुस्करायें
सुन्दर सुघड पोषित नया भारत बनायें

षिपा मिश्रा
हिन्दी (विषेष) द्वितीय वर्ष

द्रौपदी का चीर

आमजन के विष्वास का दामन
फिर सत्ता से छूटा है
लोकतंत्र में भी एक राजा ने
आज प्रजा को लूटा है
कहीं कमल ने झुककर
कींचड़ को गले लगाया है
कहीं हाथ ने पंजा बनकर
आदर्शों का गला दबाया है
बचपन से सुनता था मैं कि
मेरा भारत देष महान है
पर पूछता है मन मेरा अब
क्या यही महानता की पहचान है
ताबूत छिपाकर, भूसा खाकर भी
कौरव गर्व से ऐंठे हैं
गांधारी बना राष्ट्र समूचा,
योद्धा धृताराष्ट्र बन कर बैठे हैं
और विसंगतियां गिनाने को
वाणी मेरी अधीर है
पर कितना खींचे कितना बोले
ये द्रौपदी का चीर है...
एम.पी. की हुई झांसी की रानी
राजपूतों की छाती बन गये प्रताप
पंजाब–भगतसिंह, गुजरात–पटेल
विरोधाभासी कर्कश संताप
राष्ट्रमाला को पिरोने वालों को हमने तोड़ दिया
किसी को यू.पी., राजपूताना,
बिहार, हिमाचल से जोड़ दिया
फिर कहीं स्वर्ग में कोई रानी
एक लक्ष्मण रेखा लांघ गयी होगी
जलियावाला बाग के तीर्थ की वो
कब्रगाह जाग गयी होगी
'घास की रोटी पर हार नहीं'–
के अधर मे दहक उठी होगी
कहीं अकबरी इंकलाबी विचारो
की कस्तूरी महक उठी होगी
पर यहां धरा पर छाई चुप्पी
कितने प्रश्न उठाती है
भारत मेरा देष महान के बात क्यों टीस उठासी है
और विसंगतियां गिनाने को वाणी मेरी अधीर है
पर कितना खींचे कितना बोले
ये द्रौपदी का चीर है...
बिना लेन–देन के काम नहीं चलता
नया दर्षन नयी रीति है
बापू और शास्त्री के भारत की ये अब अघोषित नीति है
इसके आगे हम सब हैं असहाय और लाचार
राजसत्ता और बुद्धिजीवियों के यही विचार
नहीं दिखता,
नहीं देखना चाहते इससे रुकता कितना विकास
दूर–दूर तक नहीं लगता उनको
इससे संस्कृति का कोई परिहास
तंत्र के आगे रहे दण्डवत
बाजारों में भीष्म बन जाते हैं
मानों षिखंडी और दुषासन मिलकर
संस्कृति की बात उठाते हैं
भ्रष्टाचार के आगे साष्टांग तो
वैलंटाइन पष्चिम पर हाथ आजमाते हैं
संसद और दफ्तर में नीलाम संस्कृति को
वो पार्कों में जाकर बचाते हैं
और विसंगतियां गिनाने को
वाणी मेरी अधीर है
पर कितना खींचे कितना बोले
ये द्रौपदी का चीर है
कौरवों का ये अट्टहास
अधर्म कर बढ़ता प्रभाव
विहान को डसती यामिनी
धूप पर भारी पड़ती छांव
फिर क्यों बुद्विजीवी गांधी जी के
बंदर बनकर बैठे है
जलते लाक्षगृह में पांडव क्यों
अंदर तन कर ऐंठे हैं
बज रही कई रणभेरियां, कई कुरुक्षेत्र सज रहे यहां
जुट रहीं फिर गांडीव, गदाएँ,
पारजन्य बज रहे यहां
पर ये कैसे कायरतापूर्ण प्रतित, कैसा ये असमय वैराग्य
क्यों नियती का क्रीड़ास्थल बने सदा मेरे भारत का भाग्य
क्यों हर बार युग से पहले
कौन्तेय के कदम लड़खड़ायें
क्यों हर बार कोई कृष्ण आकर गीता उसे सुनायें
क्यों हर बार अपनों से निराष द्रौपदी भगवान शरण में जाये
क्यों हर बार अभिमन्यु विषमता के चक्रव्यूह में प्राण गवाएं
इस 'क्यों' को लिये घूम रहा हूं
मन उत्तर के लिये अधीर है पर सदियों से 'क्यों', क्यों
खींचा जा रहा है मानो द्रौपदी का चीर है...

नील परमार बी.ए. इतिहास तृतीय वर्ष

IDENTITY BASED STRUGGLES IN INDIA AND ITS SOLUTION

6ft tall, 60 kg weight, slim body, curly hair , B.Com (Pro) 3rd year, Delhi University student, from Kayastha community, Hindu religion having Indian nationality says, Hi guys, this is my identity ,
I present my paper on the topic, 'Identity based struggles in India and its solution ' . But before that, let me make you understand what "identity" actually means.

Identity may be defined as the distinctive characteristics belonging to any given individual or shared by all member of a particular social category or group. The term comes from the French word 'identie', which finds its linguistic roots in the Latin word 'identias', itself a derivation of the Latin adjective 'idem' meaning 'the same'. The term is essentially comparative in nature, as it emphasizes the sharing of a degree of sameness or oneness with others in a particular area or a given point.
However, the formation of one's identity occurs through one's identification with significant others (primarily with parents and other individuals during one's biographical experiences, and also with groups as they are perceived.

Hence, identity may be more conveniently described as a set of those nouns which get associated with a person by virtue of their birth or biology rather than their deliberate or conscious choice.

India is a secular country as per the declaration in the Breamble to the Indian Constitution. It prohibits discrimination against members of a particular religion, race, caste, sex or place of birth. The word secular was inserted into the breamble by the 42nd amendment (1976), which implies equality of all religions. India therefore does not to preach, practice and propagate any religion they choose. The government must not favour or discriminate against any religion. It must treat all religions with equal respect. All citizens, irrespective of their religious beliefs are equal before law. No religious instructions will be imparted in government or government aided schools.
Religions in India are known to have co-existed and evolved together for many centuries predating the Republic of India. Indian civilization is amongst the oldest living civilizations of the modern world. Ind is a country where religion is very central to the l of many people. India's age-old philosophy expounded in Hindu scriptures called Upanishad 'sarva dharma samabhava', which means 'Respect all belief systems'. This basic trait of 'Sanatan Dharm is what keeps India together despite the fact th India has not been a mono-religious country for o two millennium. A Hindu nationalist school thoughts also proclaims that with sanatan dharm being the spirit of India, the very concept of weste secularism is redundant and badly imposed.

Some researchers believe that the history India secularism begin with the protest moveme in the 5th century BC. The three main prote movements were by the Charvakas (a secularist a materialistic philosophical movement), Buddhis and Jainism. All three of them rejected the author of Vedas and any importance of belief in a deity.

In India, right from the British period, Th main contradiction was not between religious a secular but it was between secular and communal. the Western world the main struggle was betwe Church and State and Church and civil society but India neither Hinduism nor Islam had any church li structure between secular and religious pow structure. The main struggle was between secularis and communalism. The communal forces fro amongst Hindus and Muslims mainly fought for share in power, though they used their respecti religions for their struggle for power.

In modern India, the real spirit of secularis in India is all inclusiveness, religious pluralism a peaceful co-existence. However, it is politics, whic proved to be divisive and not religion. It is no religious leaders by and large who divide b politicians who seek to mobilize votes on grounds primodial identities like religion, caste and ethnici In a multi religious society, if politics is not based issues but on identities, it can prove highly divisiv Politicians are tempted to appeal to primod identities rather than to solve the problems. Th former case proves much easier. The medie society in India was thus more religiously tolerant it was non-competitive. The modern Indian society

on the hand, proved to more divisive as it is based on competitions. Rise of low castes, religious identities, linguistic groups and ethnic conflicts have contributed to the importance of identity politics in India. The discourse of identity, many scholars feel, is distinctly a modern phenomenon. It describes the situation when we encounter intensified efforts at consolidating individuals and categorical identities and reinforce self sameness. This is primarily a modern phenomenon because some scholars feel that emphasis on identity based on a central organizing principle of ethnicity, religion, language, gender, sexual preferences or caste positions, etc, are a sort of "compelling remedy for anonymity" in an otherwise impersonal modern world. It is thus said to be a pattern of belonging, a search for comfort, an approach to community. However the complex social changes and the imbrications of various forces, factors and events in this modern world, have rendered such production and recognition of identities problematic. This is to say that any search for an "authentic self or identity is not an innocent and unsubtle possibility; it involves negotiating other, often overlapping and contested, heterodox or multiple 'selves'."

This can be briefly elucidated by observing, 'the modern subject defined by its insertion into a series of separate value spheres, each one of which tends to exclude or attempts to assert its priority over the rest', thereby rendering identity problematic . Nonetheless, the concerns with individual and collective identity that simultaneously seek to emphasize differences and attempt to establish commonality with others similarly distinguished have become a universal venture.

The cleavage between Hindus and Muslims for centuries is well known. From time to time, efforts were made to eliminate the cleavage but power hungry politicians have always come in the way. The Hindu religion is the religion of the majority of Indians, its tolerance and capacity to absorb new religions and cultures within it is well known. Right to participate in governance was freely granted to them. It is in this historical background that our constitution recognized secularism as the basic fundamental feature of its structure. Religious bigotry exaggerated the cleavage by fanning the difference between the two religious, with the object of keeping a hold on one religion or the other to capture power. In the process, these bigots used Muslim minority against Hindu majority or vice versa. Religious groups further divided into castes, which rhetoric for political power. From time to time for become a political expediencies or local needs, religious fanatics in the name of religion or caste, etc, have wrecked the society. The era of religious fanaticism with religious conflicts is made prevalent by interested political personalities for self aggrandizement (glorification).

An easy example could be the demolition of babri Masjid on December 6, 1992 by the Hindu karsevaks. The city of Ayodhya is regarded by Hindus to be the birth place of the god- king Ram and is India's most sacred place. During Mughal invasion, a mosque was built by Mughal General Mir Banki, who reportedly destroyed pre-existing temples of RAMA at the site and named it after Emperor BABUR. For several years, the place was used for religious purposes by both Hindus and Muslims. After independence, several title suits were filled by opposing religious groups claiming possession of the site. One of the party used the Ayodhya debate as a major campaign issue in 1989 elections. In 1990, the party started a tour of the country to educate masses about the Ayodhya struggle. The party and other supporting organizations or a religious ceremony to symbolically start the building of a temple at the sacred site. This was the building facing the disputes structure where a dias had been erected for senior leaders.

And after that, as the report says, no appeal was made to the karsevaks not to enter or not to demolish the structure. The report notes, "This selected act of the leaders itself speaks of the hidden intentions of one and all beings to accomplish demolition of the disputed structure.' According to the report, the events in Ayodhya were "neither spontaneous nor unplanned". "This claims a salient agreement that Ayodhya offered, a unique opportunity to take the hindutva wave to the peak for deriving political benefit. The Emphasis was on religious emotion to claim. And the same is the plan for the party in the coming elections too.

I would we to Conclude the topic with focus now directed at its solution. So It's not something requiring protest movements or debates over the solution. In the past, protest happened due to people standing for the notion their identity is based on . My view make me think over the topic many a times and considering only an example of identity struggle doesn't make the topic comfortable , because no struggle has to be considered mono-causal but a collective push of many dimensions ,emphasized by a dimension, the identity struggle is based upon. Any solution to a struggle creates another struggle against the former notion .People need to be rational and humane, and must ensure a better understanding of their identity conceiving, no other to be superior or beneath any other individual/group identity.

Abhishek srivastava
B.Com (Prog) 3rd Year

EXAMS ARE LIKE CRICKET

Examination hall	:	cricket field
Examinee	:	batsman
Examiner	:	umpire
Mark sheet	:	score board
Difficult questions	:	fast paced ball
Easy question	:	boundary
Question out of paper	:	wide ball
Question paper	:	ball
Pen	:	bat
Caught cheating	:	clean bowled
Sitting idle	:	playing defensive
Principal	:	leg umpire
Distinction in three subjects	:	hat trick
Attempt no. question	:	duck
First position in class	:	man of the match
First position in school	:	man of the series
Compartment	:	lost match by 3-4 runs
Failed	:	lost the match badly

Rohit Budania
B.Sc (H) Computer Science 1st Year

THREE THINGS

Three things to respect: Teacher, Religion and Law.
Three things to cultivate: Cheerfulness, Sympathy and Contentment.
Three things to avoid: Drinking, Smoking and Gambling.
Three things to watch: Words, Behavior and Character.
Three things to love: Honesty, Purity and Truth.
Three things to govern: Tongue, Temper and Action.
Three things to prevent: Idleness, Falsehood and Slang.
Three things to stick to: Promise, Friendship and Love.
Three things to admire: Intellect, Beauty and Music.

Rohit Budania
B. Sc. (H) Comp. Sci. Ist year

A GUIDE TO LIFE AND A LIST TO LIVE BY

* The most powerful force in life-> Love.
* The greatest asset-> Faith.
* The most powerful channel of communication-> Prayer.
* The most important thing in life-> The power of God.
* The greatest joy-> Giving.
* The worst thing to be without-> Hope.
* The most destructive thing-> Worry.
* The most worthless emotion-> Self-pity.
* The greatest shot in the arm-> Encouragement.
* The most effective sleeping pill-> Peace of mind.
* The most prized possession-> Integrity
* The most satisfying work-> Helping others.
* The greatest attitude-> Gratitude.
* The world's most incredible computer-> The brain.
* The greatest loss-> The loss of self respect.
* The greatest natural resource-> Youth.
* The ugliest personality trait-> Selfishness.
* The biggest hurdle to overcome-> Fear.
* The most beautiful attire -> A smile.
* The most crippling disease-> Excuses.
* The most dangerous talk-> Gossip.

Rohit Budania
B. Sc. (H) Comp. Sci. Ist year

EVERYBODY LOVES A GOOD DROUGHT (BOOK REVIEW)

By P. Sainath

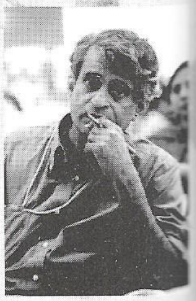

Everybody Loves a Good Drought is a collection of news reports (by P. Sainath) that were originally published in 'The Times of India'. Palagummi Sainath was awarded the Times Fellowship and this book is the result of the work conducted by him from 1st May 1993 to 30th April 1994. On the back-side of the book there is an interesting line that goes like this:- 'The poor in India are, too often, reduced to statistics.'

This is true of India. The latest census report tells us that there are 300 millions of poor people in India. Now this report has led to widespread speculations and criticisms. There is a general belief that Indian Government shies away from presenting the true extent of poverty. But let's not get into those speculations instead let's focus our attention on these 300 million. How do these people survive? How do they manage to live with less than Rs 28 a day? Are they literate? Are they politically conscious? Are they being exploited? Who exploits them? Can they fight back?

Now what Palagummi Sainath does is that he focuses his reports on these poor people. Through these reports he tries to answer some fundamental questions related to their existence. As we move from one story to another, we see an evolving structure. A structure that showcases that there is no link between Drought (that affects millions of marginal farmers and landless labours in India) and the drought relief packages sanctioned by Indian Government. A structure that shows how the Arivolilyakkam (Light of Knowledge) movement in Pudukkottai has motivated women to stand up against the illegal production of arrack. Briefly it can be stated that by linking these wide-ranging stories, Palagummi evolves a wider structure of Indian Rural economy.

Thus he develops a system that focuses on micro-level stories to create a macro-level structure of Indian Rural Economy.

This book has been divided into various sub-sections and each sub-section focuses on one particular aspect of rural economy. So there are different sections on health, education, displacement, drought etc. Each sub-section begins with an introductory essay. These essays present us with Palagummi own insightful views on the subject. The introductory essay to the sub-section 'Everybody Loves a Good Drought' brilliantly showcases the politics of drought as prevalent in rural India. Palagummi studies various phenomena such as drought, poverty, hunger etc not as events but as processes that have become integral to the structure of Indian economy.

However, the whole book has a lot of repetitions. Whole of the sentences are at times repeated. There is a constant repetition of facts. I was frustrated when I read that 'Pudukkottai receives 600mm to 800mm of rainfall per year' for the tenth time in the book. P. Sainath travelled through eight major districts and all the reports are based on these eight districts. So a little overlapping, at time, would have been acceptable but this level of repetitions could have easily been avoided.

This book has contributed immensely to my understanding of rural India. It is an example of some of the best rural journalism conducted in our country. It is obviously not a page-turner. It's not a great book but it is a very important one. Read it for the immense importance of its subject-matter.

Archit Nanda B.A (H) Eng. 2nd Yr

GENERATION GAP

How many times have we felt that our parents don't understand us, that they have no respect for us as an individual? And we often blame it on "generation gap". It seems like people from different planets are being forced to live under the same roof. There is a long bridge between parents and children which is necessary to be filled.

What does "generation gap" actually mean? Generation gap is nothing but psychological and emotional differences between parents or the older ones, and kids, or younger ones. Today it is very common to hear our parents?, kids saying "You don't understand me". But have we ever tried to understand them. We should understand that parents are under a lot of stress, too. When we are worrying about our upcoming exams, they are worrying about the boss in the office, about our school/college fees, etc.

Parents are also human beings. They also have their dreams, but they have sacrificed them so that we may able to realize ours. So instead of calling them old fashioned we must try to understand their situation be.

The main problem is that there is too much communication gap between children and parents. Parents are busy in their hectic schedule and they of have no time to listen to their kids. The teenage is the most crucial time for a human being. At this stage, they need someone to listen to them, to support them. But because of their busy schedules parents avoid talking and spending time with their kids. This makes the problem worse. Children then get involved with friends most of the time. And under the peer pressure, they take wrong path which leads to harmful consequences.

So, there is a great need to bridge this communication gap between older ones and younger ones. And as it is said "it takes two to make a row". So both parents and children must take a step forward to lessen this gap. Talking is the best way to sort all kinds of differences and problems. Parents should also understand their children by imagining themselves in the place of their kids. In the same way, children should also try to listen to what their parents say to them. After all, they are pretty much experienced than us. So, talking at dining table, having coffee together, and outings with family and listening to each others view can help in a much better way.

Talking it out calmly and coolly, with the idea of sorting thing out, changing for each other and changing for the better can be the most helpful instrument in bridging the generation gap. When this communication barrier is transcended and the ice broken, the problem does not remain that serious anymore.

Anil Dabas
B.Sc. (H) Comp. Sci. Ist Year

THE FAMISHED ROAD by Ben Okri

(BOOK REVIEW)

'In the beginning there was a river. The river became a road and the road branched out to the whole world. And because the road was once a river it was always hungry.'

Thus starts Ben Okri's The Famished Road

The book is filled with lush imaginative prose that can leave you amazed. The language is richly symbolic. Every single paragraph is filled with rich visual imagery. No word is out of place. No sentence out of tune. It's like a song whose tune lingers on. Like a poem that resonates long after it has been read. It's like a road filled with love, compassion, politics, desire, spirit, rats, a camera and, of course, hunger. A road that is endless. It's pure poetry being passed out as prose. Yet this lush prose doesn't hinder in the development of a seemingly simple story about a spirit-child named Azaro.

The novel has some colorful characters. These characters are neither static nor round. They evolve during the course of the novel. They change as the story develops yet they are inherently the same. These are richly layered characters and yet they seem simple enough. They remind me of Dickens' characters. The whole novel is somewhat Dickensian in nature. Yet it tells things with a level of objectivity. The novel thematically deals with a lot of subjects such as politics, the conflict between tradition and modernity and the effect of Capitalism. There are two political parties in the novel i.e. 'The party of the Rich' and 'The party of the Poor'. They have one thing in common i.e. they both exploit the poor. Later in the novel, Azaro's father aspires to become a politician and relieve his tribe of all the misery and suffering. The novel captures the eternal conflict between tradition and modernity. We see the impact (or the lack of impact) of modernity on the lives of the poor people. Forests are being destroyed to build new roads. Electricity and cars become accessible, but only for the rich. The life of the poor people remains unaltered. They still struggle and strive to fight their hunger.

The greatest achievement of the novel is that it perfectly blends the personal with the political. These larger issues never hinder the development of Azaro's personal story.

I read a few reviews of this book that stated that the novel was ambiguous in nature. Some of the reviews stated that it was impossible to understand what the writer was trying to say. Of course, in this book there are passages and even chapters that are ambiguous in nature. Yet what baffles me is our desire to understand everything. Art is not meant to be understood but to be experienced.

One of my professors told me that a poem is like an authentic legal document which is meant to be rationalized, analyzed and scrutinized. He said that it is nice if you hug a collection of poetry to sleep but that's not its real purpose. In short, he meant that poetry was meant to be understood rather than to be loved. I, on the other hand, believe that we read because we love to read. That is its sole purpose. The day we stop loving what we read is the day we stop reading.

Art is inherently mystical in nature. Now if a critic comes up with a 500 pages book explaining every ambiguous passage in The Famished Road, then that critic deserves to be criticized because he is insulting both the writer as well as the reader of the book. There are very few things in our life that are mystical in nature. Few things that go beyond our rational thought. Those things are to be cherished for their ambiguity. They are meant to be experienced instead of being understood. To decipher art is to destroy art. Art is meant to be felt, experienced and loved.

'A dream can be the highest point of a life.'

Archit Nanda
B.A (H) Eng. 2nd Yr

WHO IS A TEENAGER?

A person who never forgets to go to the shopping mall,
And never misses a phone call,
A person who loves to carry a mobile,
To show wealth and great style,
A person who loves to bully others,
But cannot tolerate being teased by friends and by others,
A person who wants to wander with buddies,
And never concentrate on his studies,
A person who is always ready to gossip with his mates,
And never wants to accept his fate,
A person whose eyes are filled with zeal,
And is sure the secret will never be revealed,
A person who can hear a song by Madonna,
But not take the call of his Mumma,
A person who received his allowance on Monday,
Spends it on Tuesday and borrows by Thursday,
A teenager is an absolute thinker,
And from studies the perfect slinker.

Sneha Baluni
BJMC 3rd year

THE PLIGHT OF PONIES ON WAY TO GOD

Recently I visited Vaishno Devi in Jammu. It is said to be one of the most revered holy places in India. I was expecting to see the beauty of the mountains and people there. Fortunately, I could see and appreciate both. But unfortunately this beauty was overshadowed by the painful and inhuman treatment being meted to the ponies that are used for business. Vaishno Devi happens to be a difficult journey for which these ponies are used. India, being a poor country relies very much on such businesses but that can't be taken as an excuse for the glaring 'animal abuse'. On my journey of 20kms both ways, I must have seen a number of scars and blood wounds on the frail bodies of the ponies. The owners were pulling their tails so that they would feel intense pain if they try to rest for a while. One horse that was walking continuously for 4 hrs couldn't stop for a minute to rest without being beaten with a stick very badly. Other horse owners were letting their frustration out on them. A wounded horse had to carry 3 children on its back while getting smacked continuously. The sad thing is that this cruelty happens on the way to God. There is no logic in this. I saw ponies that were being used to carry cylinders on their backs and doing their jobs correctly. A policeman could not resist his temptation to hit the leg of a pony just for funs sake! The poor creature just kept walking with others as it didn't have any other choice, on its front was a cruel policeman and on its side was its owner with a stick!

I know most of them will just take it as another problem in the world and would accept it just the way it is. This mentality towards animals is just because they can't speak and take actions the way we humans can. Had it been so, they would have gone on a strike ages ago! I am shocked that in Vaishno Devi, where millions of pilgrims go, no one has never tried to question the torture that is done to the ponies there. I am not suggesting that parties should not be used as carriers because that is not possible and is very impractical but at least some animal organization should keep a check on the treatment of animals there. The police should take action against this, because according to law, it is not legal to torture ponies like this. They actually need doctors for their wounds. Sadly, the people who go there mostly use them as a vehicle and nothing else. It's strange that no government authority ever came to their rescue.

THIS ISN'T JUST ANOTHER FILL-IN-THE SPACE ARTICLE AS ANIMALS ARE BEING BEATEN BRUTALLY WHILE THIS IS BEING READ!!!

Sunidhi Gupta
B.A. (H) Pol. Science

ONE WAY

Oh! What a woe man's life is.
Being born to suffer
Overwhelmed with distress and desolations,
Anxious to grasp every privilege it gets
Seems it didn't break through,
As he was young and innocent.

Enlightened with the passage of time
He discerns the woeful life.
He's stagnant in it,
Leaving only "One Way",
Which is elusive,
For the conceited pathetic man.

To the isolated and conservative people.
Accompanied with his humility,
And his influences,
He's crowned the "One Way",
Which is elusive,
For the conceited pathetic man.

Heulenthang Vaiphei BA(H) History 2nd yr.

FREE ELECTION SLOGAN

Political Rasgullas- A party could enter into an exclusive deal with 'Gangrams' or 'Haldiram'. Then on one side of each rasgulla they could write: "See what a sweet job we are doing for the country." And ofcourse on the other side: "Vote for BJP."

POLITICAL COLA BOTTLES – This would be a slogan written at the bottom of a cola bottle as you finish the last sip with your straw: "They have sucked the country dry. Vote for Congress".

POLITICAL BUSES – All redlines and bluelines will carry the slogan "Bus karo… Congress ko wapas lo".

POLITICAL EGG – This is a special printing process which will put a slogan on 1871776 eggs consumed in Delhi every morning. It will read: "Only we can crack the Kashmir problem. Vote for NCP."

Abhinav Goel BJMC IInd Year

उपभोक्तावादी संस्कृति समाज और समस्या

पहले बाज़ार में सिर्फ़ उपभोग की वस्तुएं बिकती थी वहीं आज 'उपभोक्तावादी संस्कृति' में सब कुछ बिकता है। जिस प्रकार उपयोगिता में परिवर्तन हुआ है उसी प्रकार बाज़ार का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। आज बाजार जाया जाता है, बाजार किया जाता है और मार्किट मनाने के लिए भी बाजार जाया जाता है। पहले बाजार एक केन्द्र में हुआ करता था, आज हर तरफ बाजार है और बाज़ार ने मनुष्य को अपने गिरफ्त में लेने के लिये हर हथकण्डे अपनाने के लिये तैयार है।

उपभोक्तावादी संस्कृति ने उपभोग व उपयोग के अंतर को समाप्त कर दिया है। आज के दौर में कुछ वस्तुओं की सेवाओं का अनायास ही प्रचलन बढ़ा है जो उपयोगी नहीं, पर उपभोगी जरूर है।

भारतीय संदर्भ में आकलन करें तो उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण की नीति के बाद यह साफ हो गया कि देष में बहुत बड़ा मध्यवर्ग उपभोक्ता तैयार है जो सुख, सुविधा, भोग–विलास तथा मनोरंजन के लिये खर्च कर सकता है। बाजार सुलभ व वैष्विक होने से उपभोक्तावादी संस्कृति का जन्म हुआ परंतु जिस प्रकार भारत में यह संस्कृति पनपी यह चिंता का विषय है। हमने सभी कार्य घटिया या निम्न स्तर पर किये। उदाहरण के लिये सेलफोन को ही ले लीजिये, सेलफोन को उपयोग इस स्तर पर किया जाये कि उसकी सार्थकता को ही शून्य कर दिया। इसी प्रकार अन्य उपकारणों के बारे में भी समझ लीजिये।

बजार ने एक बात व्यापकता से समझी कि यहां सब कुछ बिकता है– वस्तु, संवेदना, संबंध, गाली–गलौच, लड़ाई–झगड़े और फुहड़पर आदि।

उभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ाने में राज्य का भी हाथ रहा है क्योंकि उसकी नीतियों से यह बात सामने आई कि अगर आप उपभोक्ता हैं तो ही आप नागरिक हैं। आपको सजीव भी तभी माना जायेगा जब तक आप वस्तुओं का उपभोग करते हैं। एक गुण यह भी है कि वह उदार व धर्म–निरपेक्ष होता है, वह सबका समान रूप से खून चूसता है, परंतु विडम्बना यह है कि भारत में यह संख्या कम है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए 'पाउच संस्करण' का उदय हुआ अर्थात आप महंगी व उच्चस्तरीय वस्तु न्यूनतम मूल्य या एक रूपये में भी पा सकते हैं क्योंकि तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं। यही मानवता की सेवा है इसी में अधिकतम कल्याण और अधिकतम लाभ है।

इसी संस्कृति के कई दुष्प्रभाव सामने आए– सामाजिक संरचनाओं में सेन्ध लगी माताओं ने अपने बच्चों की देखभाल को ज़िम्मा बहुराष्ट्रीय उद्योगों को दे दिया। बच्चे की परवरिश के सभी उत्पाद कम्पनियों में बनने लगे, चाहे वह तेल, साबुन हो या उनकी बल–बुद्धि बढ़ाने वाले पाउडर।

एक कॉल पर भोजन होम डिलीवरी, आप क्या बनना चाहते हैं यह तो 'कंसल्टेंट' या 'कैरियर कोच' पर ही छोड़ दीजिए। ऐसी
रेडिमेड व्यवस्था से संवेदनाओं का ह्रास हुआ, भावनायें खत्म हुई, आत्मा का आत्मा से संबंध टूट गया। भला टूटे भी क्यों ना, किसी को क्या पता कि चूल्हे से बनाते समय किस तरह आंखे बरसने लगती थी। धुंए से दम घुटने लगता था, हाथ जल जाते थे फिर भी किस प्रकार प्रेम से खिलाया जाता था।

ऐसी स्थिति में संबंध मौन हो जाते है। घर में बातचीत का स्थान बहस ने लिया है। मनुष्य व लिंग भेद भी उपभोग के तौर पर देखे जाने लगे है। समाजिक संबंध भी क्षीष होने लगे अब कोई किसी का कुद नहीं है। अगर है भी तो सिर्फ उपभोग है क्योंकि वह आदि भी है अंतिम भी। उसी का परिणाम है कि दुष्कर्म जैसी समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं।

बाजार ने 'लव'(प्रेम) को भी प्रायोजित कर दिया है। कॉफी, गिफ्ट, फिल्म, बार जैसी प्रतिबद्धताएं इससे जुड़ने लगी हैं। अतः बात सिद्ध भी होती है, वेलेंटाइन वीक (फरवरी) में उपहार बनाने वाली कंपनी आर्चीज़ के शेयर एकाएक बढ़ जाते हैं।

मार्किट में मनचाहे साथी के चयन की सुविधा भी उपलब्ध हैं। इसे प्रेम का बाज़ारीकरण कहा जा सकता है जिसके पीछे कोई तत्व नहीं बजाय पूंजी का संचय है। यह बाज़ार का लोचषील मौका परस्त रूप है जो कि सभी अवसरों को भुनाने के लिये तैयार रहता है।

बाज़ार ने अपने अस्तित्व को निरंतर बनाएं रखने के लिये जीवन का मानकस्तर स्थापित करने का प्रयास किया ताकि नये उपभोक्ता ललायित हो बाजार का विस्तार हो लेकिन संसाधनों के केन्द्रीकरण व आय के असमान वितरण के कारण इसका दुष्प्रभाव यह हुआ कि समाज में चोरी, लूट, छीना–झपटी जैसी समस्या उत्पन्न हो गयी।

गांधी जी प्रातः उठकर निस्वार्थ भाव से 'आज का विचार' लिखा करते थे। इसी परंपरा को हमारे प्रगतिषील बुद्धिजीवियों ने भी आगे बढ़ाया और वह 'आज का बाज़ार' लिखने लगे। दिन–प्रतिदिन नुस्खे इजाद होने लगे, नये–नये 'कॉरपोरेट सूत्र' मनुष्य के विवेक से टक्कर ले रहे हैं। यही कारण है कि बाज़ार ऐसी पुस्तकों से भरा पड़ा है। इन पुस्तकों में वर्णित सत्य वचन की आपके जीवन में सफलता की क्या गारंटी है? कुछ कहा नहीं जा सकता।

ऐसा ही हाल कुछ बाबाओं का भी है जिनका व्यापार पिछले दो–ढ़ाई दषकों से बड़ी तेजी से बढ़ा है क्योंकि उन्हें पता है कि इस भौतिकवादी काल में व्यक्ति को आत्म संतुश्टी भले ही मिल जाये लेकिन आत्मषांति नहीं मिल सकती। इन्हीं 'सॉफ्ट टारगेट' के मद्देनजर बाबाओं ने मनुष्य के सभी संवेदषील मुद्दों पर निवेश कर

रखा है। शांति की खोज में लोग इन बाबाओं के सानिध्य में जाते हैं। इसके बाद इनके ज्ञान के जाल, प्रचार–प्रसार, व्यापार... सब जग जाहिर है। ऐसी समस्याओं के निदान तो वर्षों पहले कुछ साधारण पुरुषों ने सुझाये थे। जिसे हमने नज़रअंदाज़ कर दिया और आज हमें इन महापुरुषों की शरण में जाने पर मजबूर होना पड़ रहा है।

इसके अलावा भी कई क्षेत्र उभरें हैं जैसे 'वैडिंग प्लानर', 'कंसलटेंट', 'मिडिएटर', 'करियर काउंसलर', 'एडवाइज़र' आदि जो बताते हैं कि मनुष्य का स्वयं से नियंत्रण समाप्त हो चुका है। मनुष्य बाज़ार के प्रति समर्पित है।

गांधीवाद के संदर्भ में प्रों. भीखू पारेख ने समीक्षा करते हुए लिखा है ''आधुनिकता ने शरीर को आत्मा से ऊपर स्थान दिया है। आत्मा का शरीर पर नियंत्रण दो कारण से हुआ है आत्म स्वार्थ व अनियंत्रित आत्म सेवन (आनन्द)।

आज पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक न्याय के लिये अपभोग व उपयोग के अंतर को समझना अति आवश्यक है। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य की आत्ममुग्धता व उपभोगी प्रवृति पृथ्वी पर उसके अस्तित्व का सबसे बड़ा आत्ममुग्धता खतरा बन चुकी होगी।

रजनीश तिवारी
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीतिक शास्त्र

SPORTS

RLA FOOTBALL TEAM

Ist Row - Shivam, Anuj, Standford, Rahul. T, Saurabh, Rahul.S,
IInd Row - Emmanul, Jonathan, Rohit, Joseph, Anjaney, Deepak, Ravi, Naveen, Karthik, Nittin, Rishab, Augustine, Ebin

RLA VOLLEY BALL TEAM

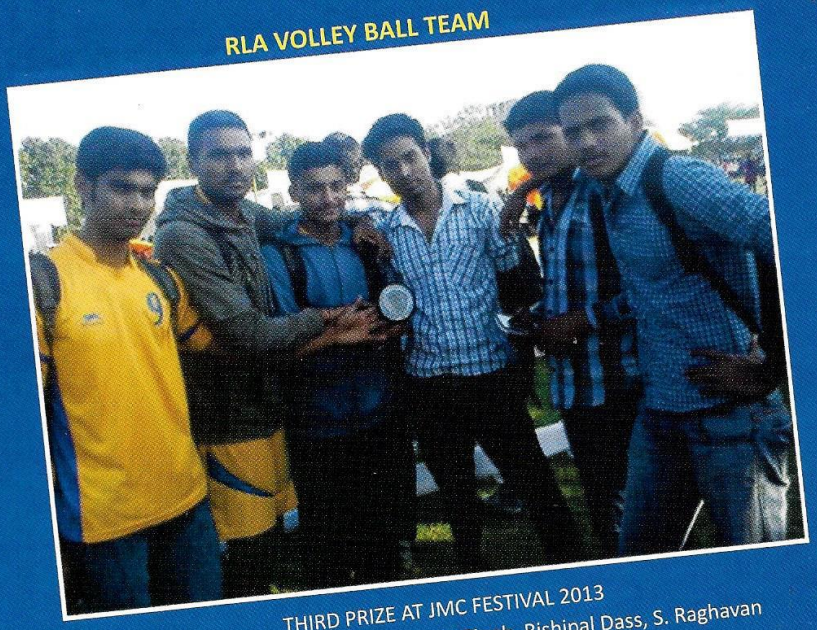

THIRD PRIZE AT JMC FESTIVAL 2013
Lokesh, Amit, Sanjay Singh, Ranveer Singh, Rishipal Dass, S. Raghavan

Moods & Moments

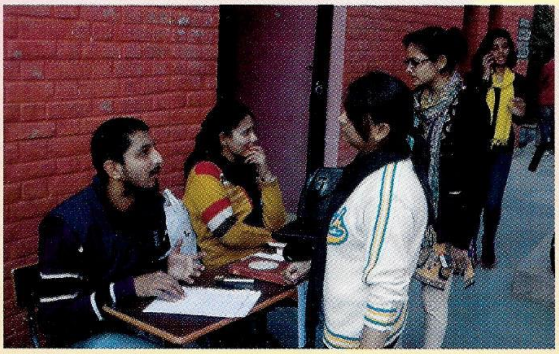
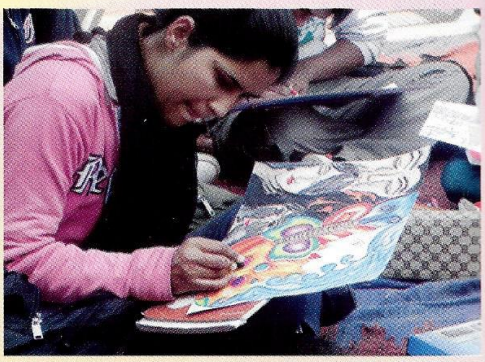

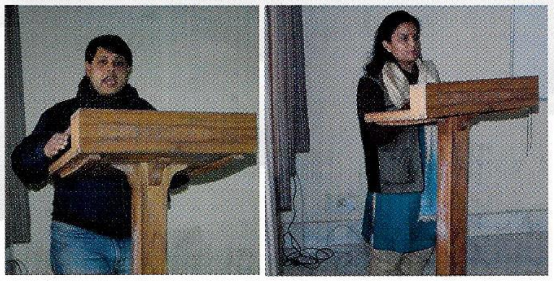

Moods & Moments

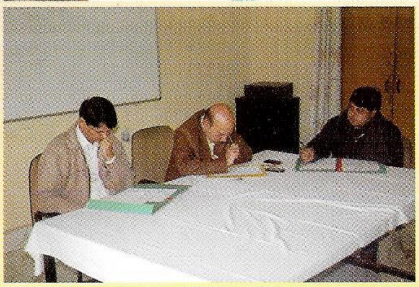

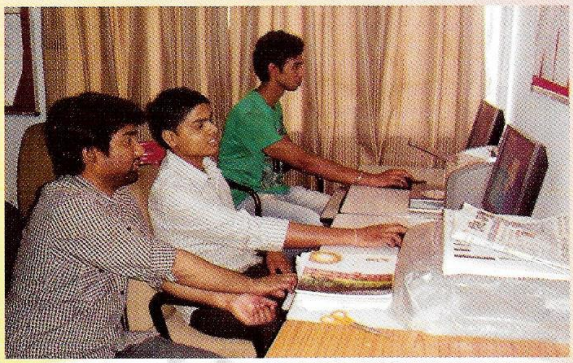

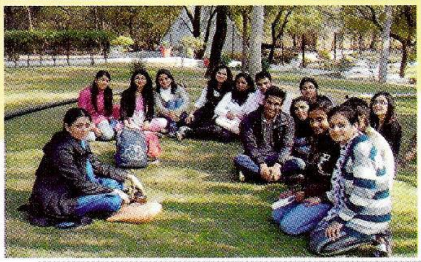

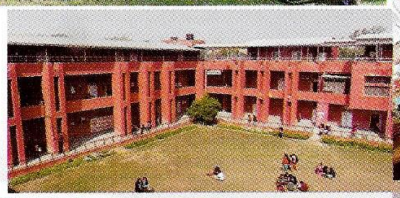

Moods & Moments

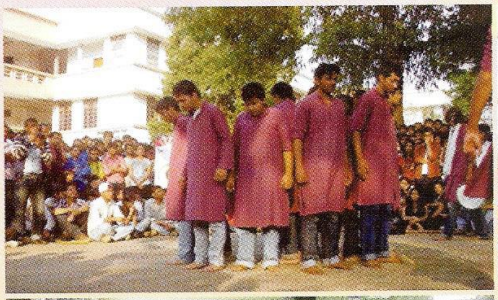

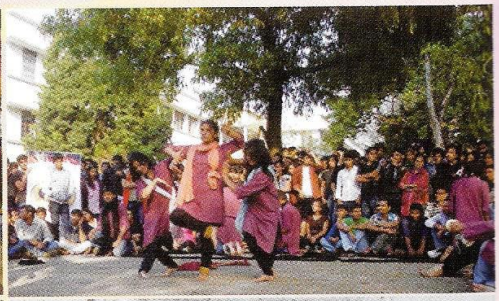

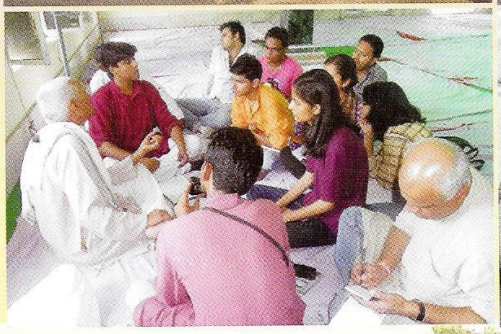

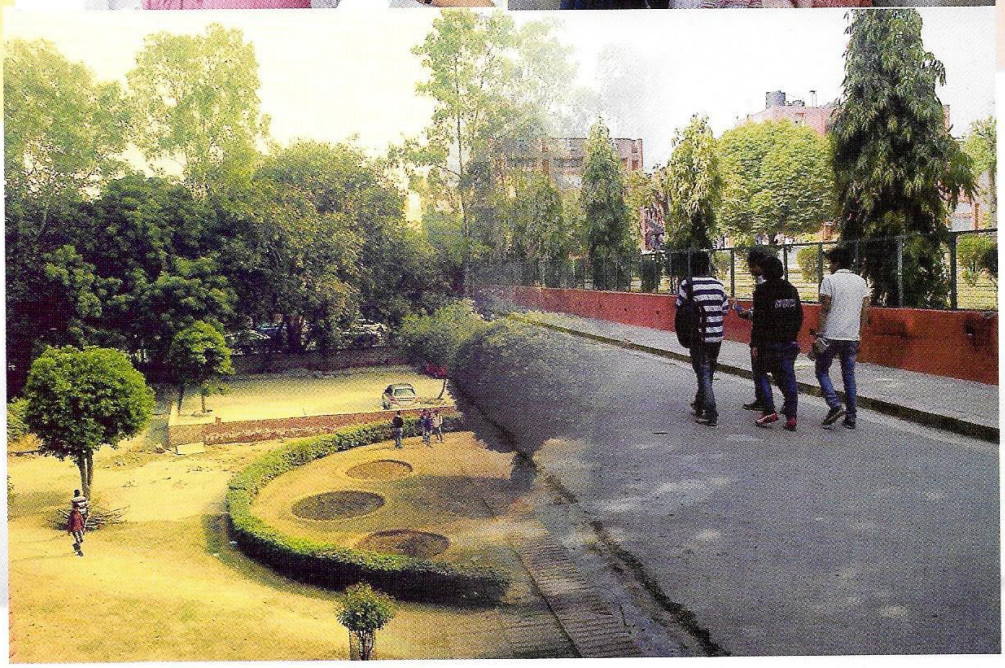

Backbone of the College

Our Faculty

Students Union

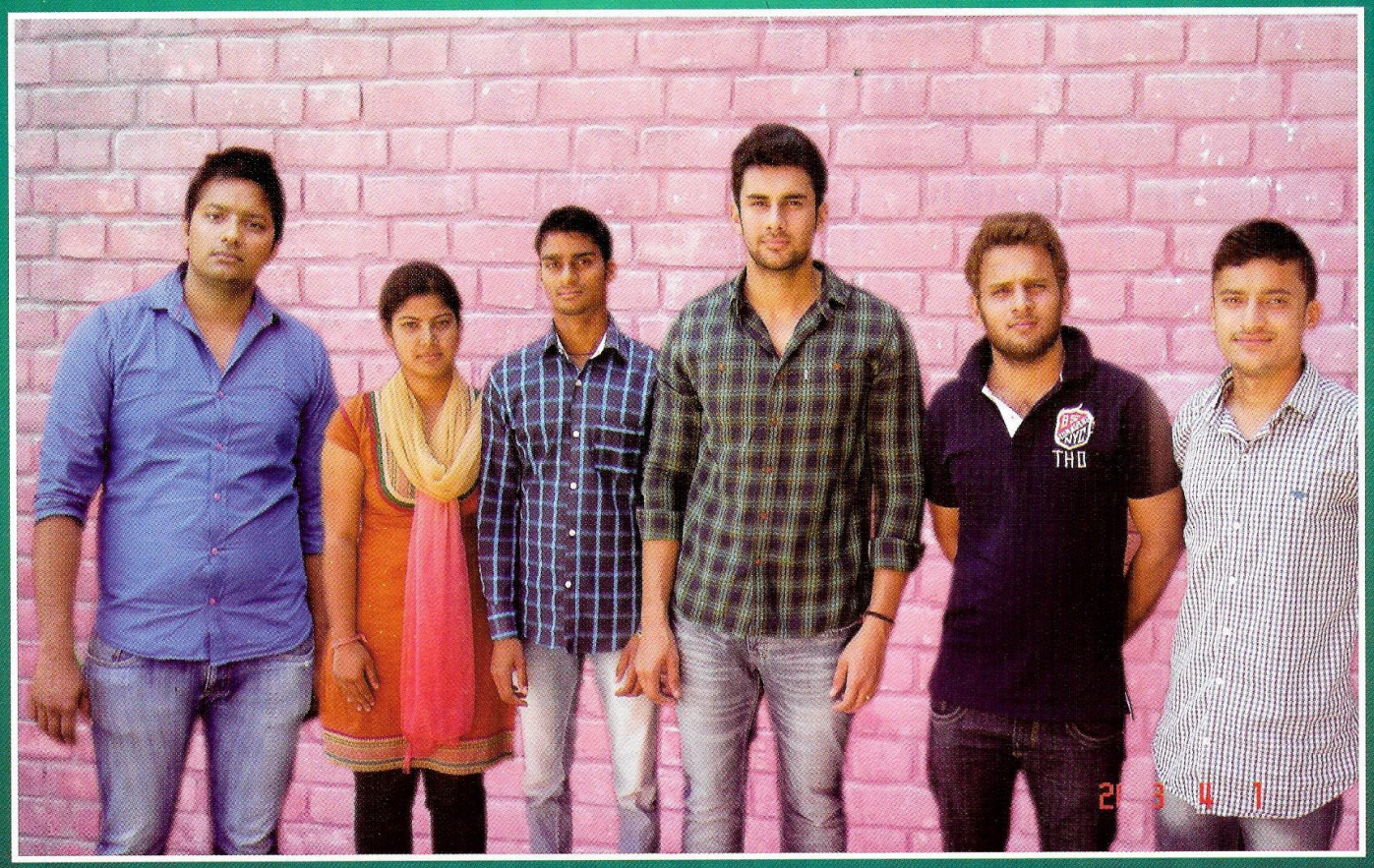

Jagvinder Singh, Pooja Rathour, Amit Kumar, Kuldeep Singh, Ashutosh Mathur, Sanjay Singh

A PROUD MOMENT FOR ALL OF US

Vice Chancellor Prof. Dinesh Singh presenting a university medal for B.SC. (HONOURS) IN GEOLOGY to Neety Nagi at University convocation. NEETY NAGI a student of Ram Lal Anand college has been awarded this medal for securing the highest percentage of marks, 1187/1400 and obtaining Ist division in each subject of B.Sc. (Honours) Examination held in 2012.

THE EDITORIAL TEAM

Though the journey has brought in some ups and downs, we nonetheless enjoyed the roller coaster ride. *Samdrishti* has provided the budding writers and artists with a platform, and it was more than a pleasing sight to have numerous entries flood our tables. We hope the enthusiasm of our vibrant youngsters never ceases. We hope to see the artists in *you* alive.

India Recypa

Recycling is future...

Recycle paper...

WASTE PAPER MANAGEMENT SERVICES

PAPER

Waste Paper Collection | Barter System | Confidential Paper Shredding | Paper Products & Stationery

INDIA RECYPA PVT. LTD.

DELHI OFFICE
M-2, Mezzanine Floor,
Modi Towers (Hemkunt Tower)
98 Nehru Place, New Delhi-110019

Phone :- +91-11-49009900
Fax no :- +91-11-49009930

MUMBAI OFFICE
1106, 11TH Floor B-Wing, Western Edge -II,
Western Express Highway, Borivali East,
Mumbai 400 066.

Phone :- +91 22 42879900
Fax no :- +91 22 42879990

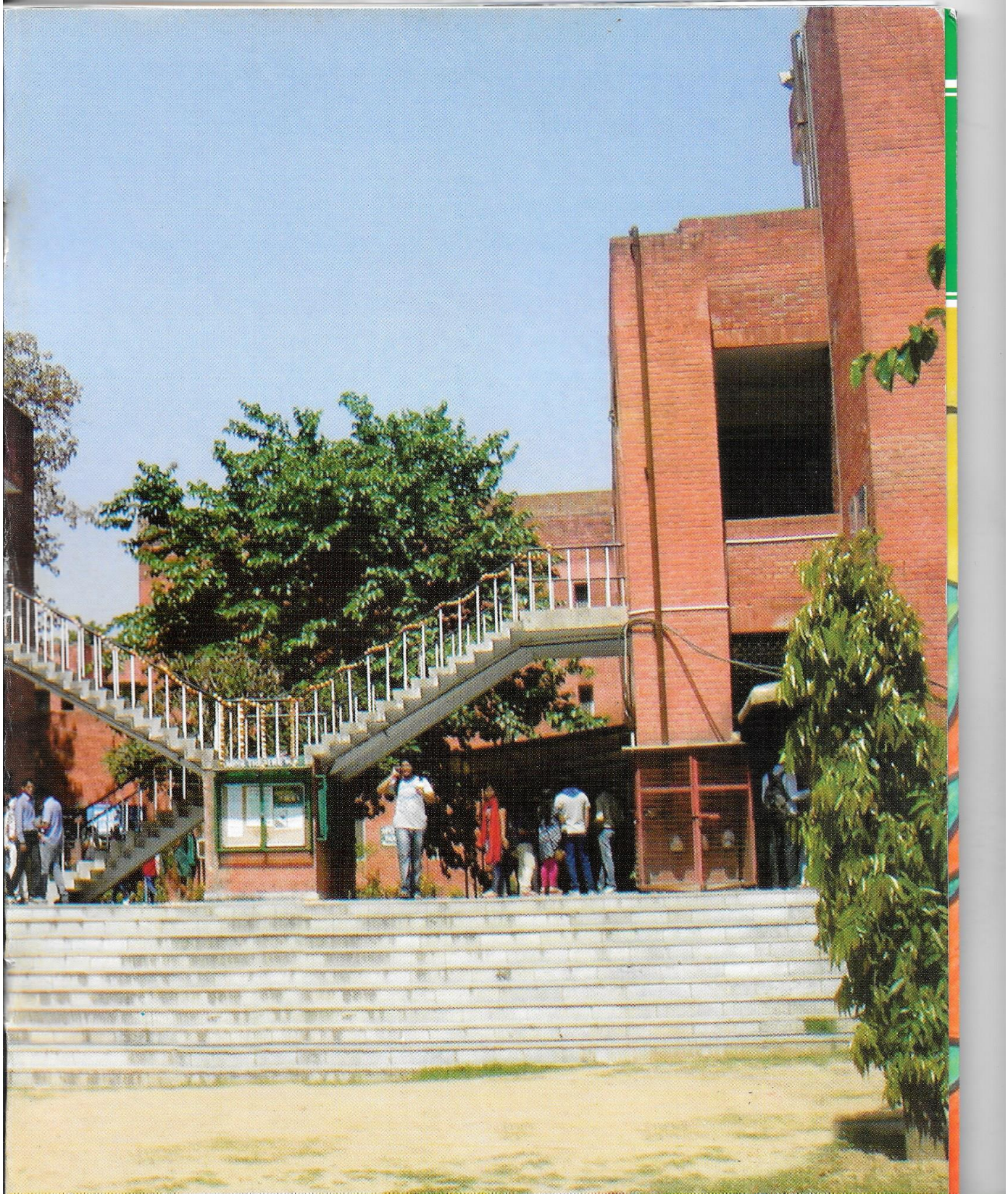

Ram Lal Anand College

(University of Delhi)

Benito Juarez Marg, New Delhi - 110021